वर्ष–5, अंक–12, दिसम्बर 2014

पटना कलम

बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

संरक्षक
श्री विनय बिहारी

प्रधान संपादक
आनन्द किशोर

संपादक
विनोद अनुपम

संपादक मंडल
सुबोध कुमार चौधरी
के. डी. प्रोज्जवल (संस्कृति)
अरविन्द ठाकुर (क्रीड़ा)
जे. पी. एन. सिंह (संग्रहालय)
अतुल कुमार वर्मा (पुरातत्व)

सम्पादकीय सम्पर्क
निदेशक
सांस्कृतिक कार्य निदेशालय
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार
विकास भवन, बेली रोड, पटना
email : culturebihar@gmail.com
vinod.anupam63@gmail.com

प्रधान सम्पादक की कलम से

साहित्य संस्कृति की आवाज है। कोई भी कला विधा हो, साहित्य उसे वैचारिक पूर्णता देता है। इसे ही ध्यान में रखते हुए बीते वर्ष से हमने 'भारतीय कविता समारोह' और 'पटना लिटरेचर फेस्टिवल' के माध्यम से विभाग की गतिविधियों में साहित्य को शामिल करने की शुरुआत की। हमें गर्व है कि भारतीय कविता समारोह को इस वर्ष कविवर गोपाल सिंह नेपाली की स्मृति से जोड़ने का अवसर मिला। हमारी कोशिश होगी कि आने वाले दिनों में भारतीय कविता समारोह के माध्यम से हम इसी तरह बिहार की गौरवशाली कविता परम्परा का स्मरण कर सकें।

इस वर्ष कविता समारोह के लिए आदर्श वाक्य के रूप में 'मेरा धन है स्वाधीन कलम ...' कविवर गोपाल सिंह नेपाली की इन पंक्तियों को रखा गया था। वास्तव में, इन्हें मात्र किसी कविता के अंश मात्र के रूप में नहीं देखा जा सकता। यह बिहार की रचनात्मकता का उद्घोष है। बिहार की रचानात्मकता लोकधर्मिता को समर्पित रही है। कहा जाता है कि 1911 में जन्मे गोपाल सिंह नेपाली ने अंग्रेजी के चाटुकार शिक्षकों के विरोध में अपनी उत्तर–पुस्तिका में अंग्रेजी शासन के खिलाफ कविताएँ लिखकर समर्पित कर दी, और फिर स्कूल नहीं गए। महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन ने विरोध की उनकी नींव को और भी पुख्ता किया। आजादी के बाद उन्होंने अपनी रचनाशीलता को राष्ट्र को समर्पित कर दिया। राष्ट्रवाद का जो स्वर उनकी कविताओं में है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। 1962 में जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया, उन्होंने लगातार सम्पूर्ण देश का दौरा करते हुए साहित्यिक गोष्ठियों के माध्यम से आमजन को चीन के विरूद्ध जागृत करने की अथक कोशिश की। जिस देशप्रेम का अलख जगाते हुए उन्होंने अंतिम सांसें लीं, भारतीय कविता समारोह की मूलभावना को कहीं–न–कहीं उसी परम्परा से जोड़कर देखा जा सकता है। विविधता में एकता को प्रतिबिंबित करते इस समारोह में केरल से लकर त्रिपुरा तक और गुजरात से लेकर मणिपुर तक के रचनाकारों की उपस्थिति से हमें अहसास हुआ कि भौगोलिक दूरियाँ कभी भी दिलों की नजदीकियों को प्रभावित नहीं कर सकती हैं। हमारी भाषाएँ भले ही अलग हों, किन्तु संवेदना के स्तर पर समस्त भारत का स्वर एक है। आपके लिए खासतौर पर इस आयोजन की विस्तृत रपट प्रस्तुत की जा रही है।

इस अंक में 'चम्पारण महोत्सव' की भी रिपोर्ट आप देख सकेंगे, जिस आयोजन को देश ही नहीं दुनिया के कई हिस्सों से आए कलाकारों ने विशिष्ट बना दिया था। कला के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता इसी से समझी जा सकती है कि माननीय मुख्यमंत्री श्री जीतन राम मांझी ने इस अवसर पर स्वयं कलाकारों को सम्मानित करने के दायित्व का निर्वहन किया। इसी प्रतिबद्धता के अंतर्गत विभाग की गतिविधियों को हम राज्य के कोने–कोने में विस्तारित करने की दिशा में सक्रिय हैं।

शुभकामनाओं के साथ!

(आनंद किशोर)
सचिव
कला संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार

चम्पारण में दिखा संस्कृतियों का संगम

मुख्यमंत्री श्री जीतन राम माँझी चम्पारण से जुड़े पर्यटक स्थलों के विकास के लिए 16.8 करोड़ रूपये खर्च करने की घोषणा की। वे मोतीहारी गांधी मैदान में आयोजित तीन दिवसीय चम्पारण सांस्कृतिक महोत्सव -2014 के उद्घाटन के बाद समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पाश्चात्य संस्कृति हमें पतन की ओर ले जा रही है। यही कारण है कि सरकार सांस्कृतिक महोत्सवों का आयोजन करा रही है, ताकि हमारी संस्कृति का विकास हो सके और हम अपनी गौरवशाली संस्कृति को जान व समझ सकें। 16 करोड़ 28 लाख की राशि में से अकेले केशरिया व लौरिया नंदनगढ़ के विकास पर 6 करोड़ 89 लाख खर्च किए जायेंगे। अरेराज मंदिर व तुरकौलिया स्थित ऐतिहासिक नीम के पेड़ के विकास पर भी सरकार ध्यान दे रही है। चम्पारण सांस्कृतिक महोत्सव के उद्घाटन के मौके पर सीएम जीतन राम माँझी ने विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान के लिए समिति के कई लोगों को प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया। सम्मानित होनेवालों में डॉ. चन्द्रलता झा, डॉ. स्वस्ति सिन्हा, डॉ. परवेज़ अज़ीज़, शम्भूनाथ सिकारिया, ऋतुराज व कार्यक्रम संयोजक अनिल कुमार वर्मा शामिल हैं।

चम्पारण सांस्कृतिक महोत्सव समिति द्वारा आयोजित तीन दिवसीय चम्पारण सांस्कृतिक महोत्सव का आगाज गणेश वंदना से हुआ। ज्यों-ज्यों रात गहराने लगी, मंच पर जमे देशी-विदेशी कलाकारों ने सुर संगीत की महफिल को परवाज़ देना शुरू कर दिया। हल्की सर्द रात में शास्त्रीय संगीत की मदहोश करनेवाली धुन लोगों के हृदय को झंकृत करने लगी। वक्रतुण्ड गौड़ी तनया श्री गणेशाय व जय गणेश गणनाथ दयानिधि भजनों पर नैनाभिराम नृत्यों की प्रस्तुति से उन्होंने दर्शकों के दिल में खास जगह बनाई। भारतीय संस्कृति परिषद् गुवाहाटी की प्रस्तुति बिहू नृत्य ने असम की माटी की सोंधी खुशबू का अहसास कराया। इस दौरान लोकवाद्यों की सुमधुर ध्वनि सुनकर ऐसा महसूस हुआ कि मानो महोत्सव के मंच पर असम अवतरित हो गया है। कला साधकों के अद्भुत नृत्य संयोजन को देख दर्शक निहाल हो गए। इसके बाद मंच पर अवतरित हुई भारत व जापान की मिश्रित संस्कृतियाँ। जापान के स्वनामधन्य सरोदवादक व उस्ताद अमजद अली खां के यशस्वी शिष्य सूजीयामा मोटो व गायकी अंग को अपने अंदर समाहित करनेवाले सुविख्यात वायलिन वादक डॉ. रंजन कुमार की जुगलबंदी ने दर्शकों के दिलों को जीतने में कामयाबी पाई। आगाज माँ दुर्गा भगवती स्तुति से हुआ। तबले पर अपनी अंगुलियों की बाजीगरी दिखाई जयपुर घराने के मशहूर तबला व पखावज वादक पं. फतेह सिंह गंगानी ने।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में कत्थक नृत्यों की मनोहारी प्रस्तुति के दर्शक मुरीद हो गए। जयपुर घराने के स्वनामधन्य कत्थक नर्तक पं. राजेन्द्र सिंह गंगानी ने अपनी विशिष्ट नृत्य भंगिमा, अनोखी शैली व भक्तिपरक आख्यानों की जीवंत प्रस्तुति से कार्यक्रम को सम्पूर्णता प्रदान की। उनकी पहली प्रस्तुति रूद्रा अष्टकम रही। फिर तीन ताल में लयकारी, बंदिशें, लीला वर्णन, राग विस्तार, त्रिबंदी, सरगम, सृजन, कविता कृति की प्रस्तुति पर दर्शक निहाल हो गए। अंत में ताल धमार व राम मालकोश पर आधारित तराने की भी खूब सराहना हुई। उनके साथ अमेरिका के उनके शिष्य-शिष्याएँ नृत्यांगना दीप्ति गुप्ता, अंजना, मरगरिटा आदि ने भी अपनी कुशल भाव-भंगिमाओं, मुख-मुद्राओं व चपलता से यह साबित कर दिया कि गीत-संगीत व नृत्य सरहदों की बंदिशों से परे हैं। कुल मिलाकर महोत्सव की पहली रात चम्पारण के सांस्कृतिक तारीख में अपना नाम सुनहरे अक्षरों में दर्ज करा गई। जब भी प्रेम की चर्चा होती है तो राधा व श्याम का प्रेम सबसे पहले आता है। राधा के निश्छल प्रेम के सामने श्याम ने भी मयूर बन राधा को खुश करने के लिए नृत्य किया। यह दृश्य चम्पारण सांस्कृतिक महोत्सव के मंच पर ब्रज के कलाकारों की प्रस्तुति में झलका। 'डांस इंडिया डांस' की प्रस्तुति में पूरे देश की संस्कृति एक साथ नजर आई। देश के छः प्रदेशों की संस्कृति से लवरेज महोत्सव रंगारंग प्रस्तुतियों के नाम रहा। जैसे-जैसे रात गहराती गई, संगीत की महफिल जवां होती गई। दर्शक एक मंच पर पूरे देश की तस्वीर देख तालियों से स्वागत कर रहे थे। गुजरात के कलाकारों ने अफ्रिकन फोक नृत्य की प्रस्तुति दी। कलाकारों ने गीत के सुर पर प्रारम्भ में थिरकना शुरू किया। गीत की लय के साथ नृत्य जवां होती गई। जब गीत और नृत्य चरम पर पहुँचा तो एक नारियल उछला और कलाकार ने अपने सिर से नारियल को फोड़ डाला। गीत मंच पर राजस्थान, हरियाणा व छत्तीसगढ़ के कलाकारों ने अपनी-अपनी संस्कृति से जुड़े नृत्य घुमर, मुखौटा लोक नृत्य, बिजणो, ओरनदेय खोडिया की प्रस्तुति पर लोगों का मन मोह लिया। एक के बाद एक कलाकारों की प्रस्तुतियों पर दर्शकों की तालियाँ देर रात तक बजती रही। चम्पारण सांस्कृतिक महोत्सव के दूसरे दिन कार्यक्रम का उद्घाटन विधायक प्रमोद कुमार व विधान पार्षद सतीश कुमार ने संयुक्त रूप से किया।

चम्पारण सांस्कृतिक महोत्सव का तीसरा व अंतिम दिन सुर, लय व ताल के बेजोड़ संगम के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन नेपाल के पूर्व उप-प्रधानमंत्री उपेन्द्र यादव, मुजफ्फरपुर के सांसद अजय निषाद, विधान पार्षद सतीश कुमार, मगध वि.वि. के पूर्व कुलपति डॉ. विरेन्द्रनाथ पाण्डेय व सीआरपीएफ के पूर्व कमाण्डेंट परम शिवन ने दीप जलाकर किया। कार्यक्रम की शुरूआत मॉडर्न पब्लिक स्कूल की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत स्वागत गान से हुआ। उसके बाद कत्थक नृत्यांगना श्रेयसी तिवारी ने अपने नृत्य का जलवा बिखेर तालियाँ बटोरी। मशहूर गज़ल गायक नवाज साबरी ने अपनी प्रस्तुति दी। उन्होंने 'है अमन की पहचान', 'मेरे देश का झंडा, फहराये आसमान में भारत का तीरंगा' गाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। 'लगी दिल की हमसे कही जाए ना, गज़ल आँसूओं से कही जाए ना'। गजल के बाद लोक गायिका मालिनी अवस्थी ने सुर, लय व ताल का संगम करा गंगा-यमुना की रवानी को महसूस कराया। भोजपुरी व अवधी भाषा की चासनी में तरासे गये गानों पर उन्होंने श्रोताओं को थिरकने पर मजबूर कर दिया।

मुकेश राज

संगीत की धुनों पर झूमता रहा : सोनपुर मेला

धार्मिक महत्व के हरिहर क्षेत्र मेले में उस वक्त सारण की गंगा-जमुनी तहजीब जीवंत हो उठी, जब पर्यटन विभाग के मंत्री डॉ. जावेद इकबाल अंसारी ने शंख की ध्वनि के बीच दीप प्रज्वलित कर मेले का विधिवत उद्घाटन किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला बिहार ही नहीं, भारत का धरोहर है। इसकी गरिमा को ऊँचाई प्रदान

करना हम सभी का कर्तव्य है।

उन्होंने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बिहार को देश व दुनिया के जिस पैमाने पर पहुँचाने का प्रयास किया, उसी सोच को आगे बढ़ाते हुए मुख्यमंत्री श्री जीतन राम मांझी के नेतृत्व में पर्यटन विभाग ने सोनपुर मेले को विकसित करने का प्रयास किया है। हमारा प्रयास होगा कि हमेशा यहाँ कुछ नया किया जाये तथा इसकी पौराणिक महत्ता को पुनर्स्थापित किया जाये।

इस अवसर पर अपने संबोधन में बिहार विधान परिषद् के उपसभापति सलीम परवेज़ ने कहा कि धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक रूप से इस मेले का काफी महत्त्व है। उन्होंने कहा कि वहाँ सालों भर श्रद्धालुओं का आना-जाना लगा रहता है। यदि पर्यटन विभाग इन मंदिर की शृंखला का जीर्णोद्धार करे, तो वाराणसी के तर्ज पर सोनपुर को भी एक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है, जो राज्य में पर्यटन उद्योग में इजाफा कर सकता है।

पीएचइडी मंत्री डॉ. महाचन्द्र सिंह ने कहा कि हरिहर क्षेत्र मेले की गरिमा को बढ़ाना हम सबका कर्तव्य है। जल संसाधन मंत्री मनोज कुमार ने हरिहर क्षेत्र को न्याय के विजय को धरती बताते हुए इसके धार्मिक महत्व पर प्रकाश डाला। स्थानीय विधायक विनय सिंह ने मेला आयोजन की व्यवस्था को सफल बताते हुए जिला प्रशासन एवं पर्यटन विभाग की सराहना की। विधायक छोटेलाल राय ने हरिहर क्षेत्र में जुटनेवाले श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों की सुविधा के लिए एक होटल निर्माण का सुझाव दिया। सभा को संबोधित करते हुए विधायक जनक सिंह ने कहा कि इस बार मेले में काफी कुछ परिवर्तन हुआ है। हरिहर क्षेत्र भारत का प्रथम केन्द्र होना चाहिए। हम नेता इसे आगे नहीं बढ़ा पाये हैं। समाज के अगुआ लोग जनता को समझें, तभी तरक्की होगी।

पूर्व में अतिथियों का स्वागत पर्यटन विभाग के प्रधान सचिव डॉ. दीपक प्रसाद ने किया। डीएम कुंदन कुमार ने आयोजक के रूप में अतिथियों का सारण की धरती पर अभिवादन किया।

सोनपुर में लगभग दो माह तक चलनेवाले इस सांस्कृतिक महोत्सव में 5 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक कला संस्कृति एवं युवा विभाग के द्वारा नृत्य संगीत के विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें सुबोध सोनपुरी (गायन), सुरांगन, पटना (लोक नृत्य), सीमा वर्मा (गायन), तारा संगीत परिषद् (भागीरथ की गंगा), तस्लीम आरीफ, बदायु, यू.पी. (कब्बाली), निश्चय, सोनपुर (नृत्य), सोहराई पासवान (गायन), रामबाबु झा एवं साथी (गायन), त्रिगुणा सेवा संस्थान, छपरा सारण (नृत्य संगीत), बिजेन्द्र गिरी एवं साथी (गायन), तपेश्वर चौहान एवं साथी (गायन), हिरामन राम एवं साथी, पं. चम्पारण बेतिया (फरिं नृत्य), रेखा जायसवाल, मुजफ्फरपुर (गायन), सुरेन्द्र नारायण यादव (गायन), उदय कुमार सिंह एवं सोनाली सरकार (जट जटिन), आलोक राज (गायन), पं. जगत नारायण पाठक (ध्रुपद गायन), नाहर बंधु (शास्त्रीय गायन), शिवचरण प्रसाद (गायन), आदिवासी नृत्य, पं. चम्पारण, ओमलाल प्रसाद एवं साथी (झमटा, थारू नृत्य), बच्चा नसीम एवं महिला कब्बाला (सवाल-जवाब), सुश्री सरगम एवं साथी (गायन), सीताराम सिंह एवं साथी (गायन), सत्यनारायण सिंह एवं साथी (गायन), नवल किशोर शर्मा एवं साथी (गायन), सुरंगमा, मुजफ्फरपुर, (नृत्य), कालिका नाट्य कला सांस्कृतिक मंच, राघोपुर, भागलपुर (शिव पार्वती प्रसंग), धीरज सिंह एवं साथी (गायन), राकेश मिश्रा एवं सुभी शर्मा (गायन), करंट लाल नट (हिरणी विरणी), शंकर पासवान (गायन), राधेश्याम वृंदावन रसीक, औरंगाबाद (नृत्य), शबीर चिस्ती एवं राजु भारती, मुजफ्फपुर (कबाली) प्रमुख हैं। इन आयोजनों में उल्लेखनीय है कि इस वर्ष प्रसिद्ध कलाकार कल्पना और अनुराधा पौडवाल ने भी अपनी कला से सोनपुर मेले की सांस्कृतिक गरिमा बनाए रखी।

सोनपुर मेले में मुंबई की मशहूर गायिका कल्पना ने तो भोजपुरी गीतों का ऐसा जलवा बिखेरा कि श्रोता मस्त हो उठे। श्रोताओं से भरे पंडाल में जब उन्होंने अपनी प्रथम प्रस्तुति 'शिव वंदना' में जब तान छेड़ी तो श्रोता वाह-वाह कर उठे। 'जेकर नाथ भोलेनाथ ऊ अनाथ कैसे होई, भोला चाह जइहन दिन त रात कैसे होई...'। इसके बाद 'न हमसे भंगिया पिसाई हे गणेश के पापा...' गाकर उन्होंने तालियाँ बटोरी।

शिव वंदना के बाद शृंगार रस की ओर बढ़ी और भोजपुरी के एक सरस गीत को काफी कायदे से गाया - 'नजर केकरो लग जाए, एगो नींबुआ दो-चार मिर्ची लटकाई ल चोली में....'। इस गीत की प्रस्तुति ने श्रोताओं को झूमा दिया। उनके साथ स्वर दे रहे थे - सुरेश आनंद।

मन मेरा मंदिर शिव मेरी पूजा तुझसे बड़ा ना कोई दूजा, हे शंभू बाबा मेरे भोलेनाथ ..... सहित भोलेनाथ के कई प्रसिद्ध भजनों को पार्श्व गायिका अनुराधा पौडवाल ने हर और हरि की पावन भूमि पर स्थित हरिहरक्षेत्र सोनपुर मेला में गाकर श्रोताओं को झूमने पर विवश कर दिया। भजनों को सुनकर शिव भक्त झूमते नजर आए। मेला के मुख्य पंडाल में अनुराधा पौडवाल ने एक से बढ़कर एक भजन गाकर समा बांध दिया। मंच पर आने के बाद अनुराधा ने अपने कार्यक्रम की शुरुआत शिव वंदना से की तो बाबा हरिहरनाथ की धरती का कण-कण शिव के जयघोष से गुंजायमान हो उठा।

भारतीय कविता समारोह

जीवन संघर्ष और सौंदर्य को मिली अभिव्यक्ति

साहित्य समाज का दर्पण होता है। कहा जाता है कि जहाँ न जाय रवि, वहाँ जाय कवि। साहित्यकार एवं कवियों की महत्ता हर समय रही है और हर समय रहेगी। वे समाज को दर्पण दिखाते रहें, समाज में बदलाव का प्रयास करते रहें। अपनी

स्वतंत्र पहचान बनाकर समाज का चित्रण करें। अपनी लेखनी में यथार्थ को महत्त्व दें। मुख्यमंत्री श्री जीतन राम माँझी आज तारामण्डल सभागार में कला, संस्कृति एवं युवा कार्य विभाग द्वारा आयोजित तीन दिवसीय 'भारतीय कविता समारोह' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन रहे थे।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि लक्ष्मण जी की पत्नी के बारे में बहुत कम कहा गया। इसी तरह महाभारत में कर्ण को वह महत्त्व नहीं दिया गया, जो दूसरों को मिला। कवि, साहित्यकारों का दायित्व है कि वे अपनी लेखनी में यथार्थ को महत्व दें। हमेशा समाज को रास्ता दिखाने के अपने कर्त्तव्य को पूरा करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस तीन दिवसीय साहित्यिक आयोजन को राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में विकसित करने की कोशिश की गई है। इस क्रम में 31 कवियों को देश के विभिन्न भागों से आमंत्रित किया गया है, जिसमें हिन्दी के साथ-साथ उर्दू, उड़िया, मलयालम, गुजराती, असमिया, मराठी, तेलुगु के शीर्ष कवियों की रचनाओं को आप सबको रसास्वादन करने का अवसर मिलेगा। इस समारोह में केरल से लेकर त्रिपुरा तक और गुजरात से लेकर मणिपुर तक के रचनाकारों की उपस्थिति में हम सब यह एहसास कर सकेंगे कि भौगोलिक दूरियाँ कभी भी दिल की नजदिकियों को प्रभावित नहीं कर पाती। हमारी भाषा भले ही अलग-अलग हो, संवेदना के स्तर पर समस्त भारत का स्वर एक है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने पूर्व मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्होंने मात्र विकास की धारा ही राज्य में नहीं बहायी बल्कि विकास, सुशासन के साथ-साथ साहित्य कला की ओर बढ़ने का भी सार्थक प्रयास किया, इसके लिये हम उन्हें धन्यवाद देते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार सरकार कला के संवर्द्धन में हर तरह का सहयोग करने के लिए सदा तैयार रहेगी।

समारोह को नामचीन कवि श्री अशोक वाजपेयी एवं उड़िया भाषा के प्रसिद्ध कवि श्री रामाकान्त रथ ने भी अपने विचारों को रखा तथा अपनी काव्य रचनाओं को सुनाया। श्री अशोक वाजपेयी ने अपने उद्गार में कहा कि बिहार न होता तो हिन्दी लेखकों को अपनी गरिमा का एहसास नहीं होता।

उद्घाटन सत्र के मौके पर श्री वाजपेयी ने कहा कि हम हिंसक समाज में रह रहे हैं, कभी अल्पसंख्यकों के खिलाफ, कभी महिलाओं के खिलाफ हिंसा में संलिप्त हैं। ऐसे में, कविता ही है, जो यह जताने की कोशिश करती है कि हम ही वे हैं और वे ही हम हैं। फिर हिंसा क्यों और किसके खिलाफ? हम ही हैं जो मरते हैं और हम ही हैं जो मारते हैं। हम सिरफिरे लोग हैं। अगर सिरफिरे न होते तो कविता लिखने जैसा नीरस काम क्यों कर रहे होते। लेकिन यह सच्चाई है कि कविता ही शब्दों को नया आयाम और विस्तार देती है। शब्दों में कटौती मानवीयता की कटौती है। जिसके पास जितने कम शब्द होते हैं, मानवीयता सिमटती है। हम (कवि) आपकी आत्मा के जासूस हैं। कविता का सच तो अधूरा सच है। यह सच पूरा तब होता है जब आपकी आत्मा का सच इसमें मिलाते हैं। यह सच्चाई है कि हम दुनिया को बदल नहीं सकते, लेकिन बदलाव लाने की संभावना बनाए रखते हैं। जब हम बहुत चकाचौंध से घिरे होते हैं तब कविता हमें यथार्थ से अवगत कराती है। इस मौके पर डॉ. रामवचन राय ने कहा कि कविता हमें रोटी नहीं देती, लेकिन सलीके से रोटी खाना सिखलाती है।

भारतीय कविता समारोह का आयोजन न सिर्फ आज के कठिन समय में सृजनात्मक अनुभव को परस्पर साझा करना है, बल्कि सकारात्मक संवाद के जरिए सामाजिक समरसता, धर्मनिरपेक्षता एवं लोकतांत्रिक मूल्यों और मर्यादाओं को भी समृद्ध और विकसित करना है। उन्होंने कहा कि भारतीय कविता समारोह की शुरूआत वर्ष 2013 में हुई। बिहार में यह अपनी तरह का पहला आयोजन था, जिसमें हिन्दी-उर्दू के अलावा बांग्ला, असमी, मराठी, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, मैथिली और भोजपुरी के कवि एक साथ आमंत्रित हुए। इसी कड़ी में यह दूसरा आयोजन है।

स्वागत भाषण सचिव कला, संस्कृति श्री आनन्द किशोर ने किया और कहा कि साहित्य के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। कविता को साहित्य का आरंभिक रूप माना जाता है। बिहार में कविता की सुदीर्घ परम्परा रही है। वाणभट्ट से लेकर विद्यापति और आधुनिक युग में राष्ट्रकवि दिनकर से लेकर अरुण कमल तक की कविता में बिहार के जीवन संघर्ष और सौंदर्य की अभिव्यक्ति मिलती है। हम मानते हैं कि कविता वैकल्पिक सपने को देखने की ताकत पैदा करती है। साहित्य और समाज के इस सरोकार को देखते हुए कला, संस्कृति विभाग ने साहित्य को एक महत्वपूर्ण अवयव के रूप में स्वीकार करते हुए गत वर्ष से भारतीय कविता समारोह के आयोजन की शुरूआत की है। इसी क्रम में हमलोगों ने प्रेमचन्द जयंती और भारतेन्दु जयंती को भी पूरी गरिमा से मनाते हुए समाज एवं साहित्य उत्सव की कड़ी के अन्तर्गत लोगों को जोड़ने की कोशिश की है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने नामचीन हिन्दी कवि श्री अशोक वाजपेयी एवं उड़िया भाषा के कवि श्री रामाकान्त रथ को प्रतीक चिह्न, अंगवस्त्र भेंटकर सम्मानित किया। सचिव, कला एवं संस्कृति श्री आनंद किशोर एवं विधान पार्षद श्री रामवचन राय ने मुख्यमंत्री को अंगवस्त्र एवं प्रतीक चिह्न भेंटकर सम्मानित किया। इस अवसर पर कवि श्री आलोक धन्वा, सचिव भवन निर्माण श्री चंचल कुमार सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति एवं साहित्यप्रेमी उपस्थित थे।

पटना में भारतीय कविता

❑ अशोक वाजपेयी

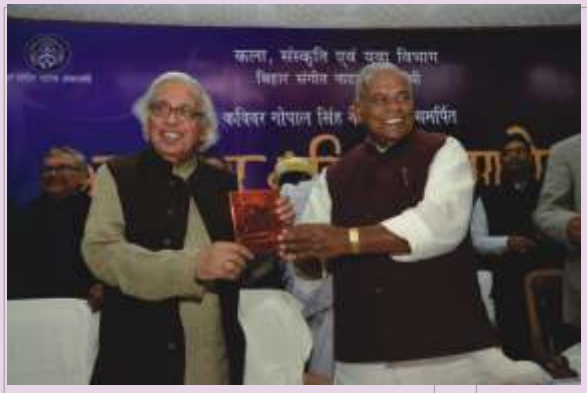

दशकों पहले हमने भारत भवन में कविभारती नाम से एक वार्षिक आयोजन शुरू किया था, जिसमें अनेक भाषाओं के कवि शिरकत करते थे। कविता की हमारी समझ, उसकी स्थिति और संभावना, उसकी स्थानीयता और सार्वभौमता के आस्वाद, सबका भूगोल बढ़ता था। पटना में बिहार सरकार के कला और संस्कृति विभाग ने भारतीय कविता समारोह की एक नई वार्षिक श्रृंखला शुरू की है, जिसका इस बार दूसरा संस्करण आयोजित हुआ। उसमें अनेक भाषाओं के कवि आए, जिनमें ओडिया रमाकांत रथ, गुजराती सितांशु यशस्चंद्र, हिन्दी प्रयाग शुक्ल, गिरधर राठी, मंगलेश डबराल, असमिया मणिकुंतला भट्टाचार्जी आदि शामिल थे। श्रोताओं और रसिकों की बड़ी भीड़ देख कर फिर इस धारणा की पुष्टि हुई कि पटना में साहित्य की एक जीवित उपस्थिति है। हिन्दी अंचल का एक बड़ा सार्वजनिक दुर्गुण यह है कि उसमें कुछ भी समय पर शुरू नहीं होता। आधे घंटे की देर तो लगभग अनिवार्य मान कर चला जाता है।

अपने लोकतंत्र में अब हम ऐसे मुकाम पर पहुँच गए हैं कि राजनीति और संस्कृति में, सत्ता और साहित्य के बीच अधिकतम संभव दूरी हो गई है। संवाद यही नहीं है कि गायब हैं, वह लगभग असंभव, कम से कम राजनीति और सत्ता को अनावश्यक लगने लगा है। हमारे ज्यादातर प्रधानमंत्री लालकिले की प्राचीर से हर वर्ष देश को सम्बोधित करते हुए जिस एक क्षेत्र का भूल से जिक्र नहीं करते वह संस्कृति है। आप शायद ही किसी राजनेता पर यह आरोप लगा सकते हैं कि उसकी साहित्य या संस्कृति में कोई दिलचस्पी है। अधिक से अधिक अखबार या भविष्यफल पढ़े वाले नेता कभी भूले-भकटे एकाध पुस्कत पढ़ते हैं, ऐसा संदेह करने का भी कोई आधार नहीं है।

बिहार के मुख्यमंत्री जीतनराम माँझी, देर से सही, पर उद्घाटन करने आए और हालांकि उन्हें गया जाना था, पूरे सत्र में बैठे रहे। उन्होंने असाधारण विनय से यह स्वीकार किया कि इतने सारे कवियों और विद्वानों के बीच वे अटपटा अनुभव कर रहे हैं। यह भी कहा कि जब कभी हम लोग मुश्किल में पड़ते हैं तो हमें कोई-न-कोई कविता याद आती है, जो राहत देती है और कई बार रास्ता भी दिखाती है। उन्होंने यह घोषणा की कि कला, संस्कृति और साहित्य के लिए बिहार सरकार दोनों हाथों से धन सुलभ कराने के लिए तैयार हैं। यों तो, उकने अनुसार, कवि और कविता रास्ता दिखाते हैं, पर कभी-कभी भटक भी जाते हैं, हमारे दो महाकवियों ने क्रमशः 'रामायण' और 'महाभारत' में लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला और सूर्यपुत्र कर्ण के साथ जो अन्याय किया है उसे उन्होंने भटकाव माना और यह जोड़ा कि लेकिन यह भटकाव कभी-कभार ही हुआ है।

मूर्धन्य कवि रमाकान्त रथ ने यह मर्मोक्ति की कि कोई भी कवि यह दावा नहीं कर सकता कि वह वैसी कविता लिखने में सफल हुआ है जैसी कि वह चाहता था। कविता एक स्तर पर कवि की विफलता का आख्यान होती है।

('जनसत्ता' में प्रकाशित स्तम्भ 'कभी कभार' से साभार)

कविता समारोह

22 नवम्बर 2014

बाणभट्ट सत्र

पुष्पा भारती (हिन्दी)
वसंत आबाजी दहाके (मराठी)
ए. कृष्णा राव (अंग्रेजी)

आचार्य शिवपूजन सहाय सत्र

रमाकांत रथ (उड़िया)
विश्वनाथ प्र० तिवारी (हिन्दी)
वसीम बरेलवी (उर्दू)
उदय शंकर शर्मा (मगही)
सितांशु यशश्चन्द्र (गुजराती)
प्रतिभा नन्दकुमार (कन्नड़)

नलिन विलोचन शर्मा सत्र

गिरधर राठी (हिन्दी)
मणिकुन्ता भट्टाचार्य (उड़िया)
भावना शेखर (हिन्दी)
रश्मि रेखा (हिन्दी)

23 नवम्बर 2014

मिर्जा अब्दुल कादिर बेदल सत्र

केदार नाथ सिंह (हिन्दी)
प्रयाग शुल्क (हिन्दी)
नचिकेता (हिन्दी)
अनवर अली (मलयालम)
सुधीर प्रोग्रामर (अंगिका)
सुल्तान अख्तर (उर्दू)

हीरा डोम सत्र

मंगलश डबराल (हिन्दी)
मृदुल दासगुप्ता (बंग्ला)
रामवन ऑम्बी नेमचॉबी (मणिपुरी)
तारानंद वियोगी (मैथिली)
राम विलास (बज्जिका)

भिखारी ठाकुर सत्र (समापन सत्र)

बद्री नारायण (हिन्दी)
चन्द्रकांत मुरा सिंह (काक बरोट)
मोनिका वीरेन्द्र (भोजपुरी)
सतीश चंद्र झा (संस्कृत)

प्रशासनिक हाथों में वायलिन

प्रशासनिक संचिकाओं पर हस्ताक्षर करने वाले हाथों ने जब वायलिन के तारों को छेड़ा तो रवीन्द्र भवन में उपस्थित श्रोता समूह विस्मित हो उठे। आई ए एस ऑफिसर्स एसोसिएशन की ओर से आयोजित संगीत संध्या 'हिन्दी मेलोडी आन वायलिन' इस मायने में विशिष्ट थी कि प्रस्तुति के लिए कोई अनुभवी संगीतकार नहीं, वरिष्ठ आए ए एस अधिकारी के सी साहा अपनी वायलिन के साथ उपस्थित थे। वायलिन वाद्ययंत्रों में सबसे मधुर माना जाता है। वायलिन की धुनों से उतरती स्वर लहरियाँ ऐसी लगती हैं जैसे सीधे हृदय में उतर रहीं हों। बिहार लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष पद का निर्वहन कर रहे के सी साहा ने इस अवसर पर 'एक प्यार का नगमा है, मौजों की रवानी है... ','मेरा जीवन कोरा कागज... कोरा ही रह गया ....','हम थे जिनके सहारे. ... वे हुए न हमारे ...', 'कहीं दूर जब दिन ढल जाए ...', करवटें बदलते रहे सारी रात हम ...', जैसी कालजयी गीतों की धुन को अपने वायलिन पर बजाया तो दर्शक भावविभोर होकर सुनते रह गए। हॉल में बैठे लोगों को विश्वास नहीं हो रहा था कि इतनी प्रशासनिक जिम्मेदारियों को संभालते हुए वे संगीत साधना के लिए कैसे समय निकाल लेते हैं। इस मौके पर वरिष्ठ प्रशासनिक पदाधिकारी एवं बीपीएससी के अध्यक्ष के सी साहा ने एक से एक गीतों का धुन अपनी वायलिय पर छेड़ी। इस अवसर पर उन्होंने अपनी गीत का सीडी भी जारी किया। सीडी के बारे में बताया गया कि यह बाजार में उपलब्ध है। श्रोताओं के लिए रवीन्द्र भवन में भी इसे उपलब्ध कराया गया था। बताया गया कि इस सीडी की विक्री से जितना भी फंड उपलब्ध होगा उसे मुख्यमंत्री राहत कोष में दान दिया जाएगा जिससे कि जरूरतमंदों के हित में इस धनराशि का उपयोग किया जा सके। इस मौके पर विधानसभा अध्यक्ष उदय नारायण चौधरी ने कहा कि प्रतिभा अपना रास्ता तलाश ही लेती है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण के सी साहा हैं। तमाम प्रशासनिक जिम्मेदारियों के बावजूद उनके अन्दर की यह प्रतिभा मुखर होकर संगीत के इस सीडी के रूप में बाहर आ गई। कार्यक्रम का संचालन एसोसिएशन के सचिव विवेक कुमार सिंह (प्रधान सचिव, पर्यावरण एवं वन विभाग) ने किया। इस अवसर पर एसोसिएशन के अध्यक्ष आलोक कुमार (मुख्य परामर्शी, योजना परिषद्), कोषाध्यक्ष दीपक कुमार सिंह (सचिव, जल संसाधन विभाग) सहित बड़ी संख्या में प्रशासनिक पदाधिकारी एवं उनके परिवार उपस्थित थे।

एकलव्य खेल केन्द्रों पर खर्च होंगे 1.53 करोड़

बिहार में खेल और खिलाड़ियों के हित में नई शुरूआत साल 2008 में तत्कालीन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने 'मुख्यमंत्री खेल विकास योजना' की शुरूआत की थी। राज्यभर में करीब 14 जगहों को आवासीय खेल प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में विकसित किया गया। खेल विभाग से मिली जानकारी के अनुसार इस वित्तीय वर्ष में इस पर करीब 1 करोड़ 53 लाख रुपये खर्च किये जायेंगे। इस योजना में ग्रामीण इलाकों के युवा खिलाड़ियों की प्रतिभा को संवारने का काम किया जा रहा है, ताकि खेल में भी राज्य आग बढ़ सके।

इस योजना के अंतर्गत जिला स्तर पर 'एकलव्य राज्य आवासीय खेल प्रशिक्षण केन्द्र' खोले गये हैं। इसमें राज्य सरकार द्वारा चयनित प्रशिक्षकों द्वारा युवा खिलाड़ियों को प्रशिक्षित किया जाता है। विभाग द्वारा अब 15 नए एकलव्य केंद्र बालक तथा बालिकाओं के प्रशिक्षण के लिए खोले जायेंगे। इन केन्द्रों का चयन हो चुका है। ये केन्द्र भागलपुर, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, दरभंगा, मधुबनी, कटिहार, बांका, नवगछिया, जमुई, लखीसराय, शेखपुरा और औरंगाबाद में खुलेंगे।

विभाग के अनुसार इसमें राज्य के खेल कैलेंडर में शामिल सभी खेलों का प्रशिक्षण खिलाड़ियों को दिया जायेगा। किंतु फिलहाल इसमें फुटबॉल, बास्केटबॉल, वॉलीबॉल, कबड्डी, हैंडबॉल, बैडमिंटन और ताइक्वाडो जैसे खेलों को शामिल किया गया है।

हर केन्द्र पर किसी एक खेल का विधिवत प्रशिक्षण दिया जायेगा। इसके लिए एक अनुभवी एनआइएस कोच देने का प्रावधान है। इसके अलावा हर गेम के लिए निश्चित खिलाड़ी होंगे।

फुटबॉल : 25 खिलाड़ी, कबड्डी : 15 खिलाड़ी, खो खो : 18 खिलाड़ी, वॉलीबॉल : 20 खिलाड़ी, बॉस्केटबॉल : 20 खिलाड़ी, हॉकी : 25 खिलाड़ी, तीरंदाजी : 10 खिलाड़ी, हैंडबॉल : 20 खिलाड़ी, बैडमिंटन : 20 खिलाड़ी, ताइक्वांडो : 15 खिलाड़ी।

इससे करीब 400 खिलाड़ियों को मुफ्त में आवास के साथ उनके रूचि के खेल में उन्हें प्रशिक्षित किया जायेगा, ताकि वे अच्छे खिलाड़ी बनें और राज्य के लिए राष्ट्रीय-अंतराराष्ट्रीय स्तर पर मेडल लाकर सूबे का नाम रोशन करें। इस योजना के अंतर्गत 100 रुपये प्रति दिन प्रति बच्चे पर भोजन मद में खर्च किया जाना है। उसके अलावा हर खिलाड़ी को उसके खेल के हिसाब से जरूरी किट मुहैया कराया जायेगा। 2000 रुपये प्रति माह आपातकालीन स्थिति के लिए होगा। जबकि कुक को प्रति केन्द्र 3000 रुपये मेहनताना दिया जायेगा। साल में 12,000 रुपये मैदान व कोर्ट बनाने तथा उसके मरम्मती पर खर्च किया जाना है।

इस योजना के अंगर्तत कोच के सेलेक्शन के लिए एनआइएस से डिप्लोमा किये हुए प्रशिक्षकों को प्राथमिकता दी जाती है। उनके अभाव में अच्छा प्रदर्शन किय हुए पूर्व खिलाड़ियों को भी मौका दिया जाता है। फिलहाल इस योजना के अंतर्गत सभी प्रशिक्षकों को 10 हजार रुपये प्रति माह दिया जाता है। पर विभाग इसे आने-वाले दिनों में 20 हजार रूपये प्रतिमाह करने पर विचार कर रही है।

फिलहाल विभाग समय-समय पर विज्ञापन निकालती है। जिसके बाद बच्चे आवेदन कर जिला स्तर पर ट्रायल देते हैं। इसके बाद उनका सेलेक्शन किया जाता है। खेल विभाग के डायरेक्टर अरविन्द ठाकुर का कहना है कि फिलहाल इस योजना के अंतर्गत नौंवी कक्षा के खिलाड़ियों का एडमिशन लिया जाता है। पर ऐसे बच्चों को 10वीं के बाद इस सुविधा को लेने में कुछ दिक्कतें आती हैं। इसलिए विभाग इस पर विचार कर रहा है कि इसे छठी या सातवीं कक्षा से शुरू किया जाये। इससे खिलाड़ियों को पढ़ाई के साथ खेल में भी निरंतरता बनाने में सहुलियत होगी।

❑ कुमारी उषा

पाण्डेय सुरेन्द्र की सिंहावलोकन प्रदर्शनी

लगभग दो- ढ़ाई दशक के लम्बे अंतराल के उपरान्त शीर्षस्थ मूर्तिकार पाण्डेय सुरेन्द्र जी के मूर्तिशिल्पों का अवलोकन, मेरे लिए सुखद अनुभूति प्रदान करनेवाला था। मौका था कला, संस्कृति एवं युवा विभाग तथा बिहार ललित कला अकादमी, पटना का संयुक्त आयोजन 'कला

मंगल' प्रदर्शनी शृंखला के अन्तर्गत देश के शीर्षस्थ मूर्तिशिल्पी पाण्डेय सुरेन्द्र जी के कृतियों की सिंहावलोकन प्रदर्शनी।

पाण्डेय जी का जन्म बिहार में हुआ। कला की शिक्षा शांति निकेतन में हुई। कला एवं शिल्प महाविद्यालय इनकी कर्मभूमि रही, जहाँ से ये सेवा निवृत हुए। कला की उच्च शिक्षा अध्ययन के लिए इन्हें छात्रवृत्ति प्राप्त हुई और ये अमेरिका गए। कांस्य शिल्प के निर्माण प्रक्रिया, इटालियन पद्धति और रोम की पद्धति का गहरा अध्ययन किया। इन्होंने कांस्यशिल्प के

गढ़ने की निर्माण प्रक्रिया पर एक पुस्तक 'ब्रांज कास्टिंग' लिखी जिसे देश भर के मूर्तिशिल्पियों ने सराहा। शांतिनिकेतन में अध्ययन के दौरान इन्हें देश के कालजयी मूर्तिशिल्पी राम किंकर बैज का सान्निध्य प्राप्त हुआ। अपने गुरु के प्रति आदरभाव इनके मन में आज भी हिलोरें ले रही हैं जिन्हें ये सहजता से प्रकट करते हैं। गुरु-शिष्य परम्परा के निर्वहन करने वाले पाण्डेय सुरेन्द्र जी ने पटना में पहली बार डा० राजेन्द्र प्रसाद की ग्यारह फुट ऊँची कांस्य प्रतिमा का सृजन राज्य के वरिष्ठ मूर्तिकार जयनारायण सिंह के साथ मिलकर की जो राँची में स्थापित की गई। संभवत: इससे पहले जो भी कांस्य-प्रतिमा बिहार में लगाई गयी उसे बनाने का श्रेय राज्य के बाहर के कलाकारों को जाता है। इसके उपरान्त ही अपने राज्य में कांस्य प्रतिमा का निर्माण शुरु हुआ। इस प्रतिमा का निर्माण जब चल रहा था उन दिनों मैं कला एवं शिल्प महाविद्यालय पटना में अध्ययन कर रहा था।

इस सिंहावलोकन प्रदर्शनी में पाण्डेय सुरेन्द्र जी की कई माध्यमों की कृतियों को देखने का अवसर मिला। पत्थर, कांस्य और फाईबर माध्यम की कई कृतियाँ इनके कार्यानुभव को दर्शाती है। एक माध्यम से अन्य माध्यम की ओर प्रस्थान तो पड़ाव ही है। शुरू के इनके सृजन संसार में कांस्य की कुछ मूर्तियाँ हैं तो बाद में इन्होंने फाईबर माध्यम में कई शिल्प सृजित किए। पर आश्चर्य यह देखकर ज्यादा हुआ कि इन दिनों ये संगमरमर के पत्थरों को तराश रहे हैं। इनके कुछ मूर्ति शिल्पों में पत्थर और कांस्य दोनों माध्यमों को देखकर इस बात का अंदाजा लगाया जा सकता है कि माध्यम पर इनकी पकड़ कितनी है। ये अपनी अभिव्यक्ति के लिए माध्यम की एक दो कृतियाँ मुझे जानी-पहचानी लगी। मसलन, इसका

सृजन जब हुआ तो मैंने काफी करीब से इसके निर्माण की तकनीकी प्रक्रिया को देखा था।

इनके बाद के प्रस्तर शिल्प को देखें तो वह हमसे सीधा संवाद स्थापित करती है। पिंक मार्बल की इन कृतियों को छूने के लिये आपकी ऊँगलियाँ मचल उठेंगी। कोमलता का अहसास देगा यह कठोर पत्थर। इनके मूर्तिशिल्प की भाषा अत्यंत सरल, सहज आकर्षित करनेवाला है। इनके द्वारा संगमरमर में तराशी गई मूर्तियों में चाक्षुषी सौंदर्य भी है जो सांकेतिक भी है। हालांकि, आज के संदर्भ में, इनके मूर्तिशिल्प जितने देखने में सहज लगते हैं, इनका कला चिंतन उतना ही दार्शनिक है। इस सिंहावलोकन प्रदर्शनी का मनोयोग से अध्ययन करें तो बंगाल स्कूल की छाप भी कई मूर्तिशिल्पों में नजर आएगी तथा यहाँ के माटी के गंध को भी महसूस किया जा सकता है तथा समकालीन कला में इनके हस्तक्षेप को नकारा नहीं जा सकता है। कुल मिलाकर यह प्रदर्शनी राज्य के युवा मूर्तिकारों को अवश्य उर्जस्वित करेगी।

❑ मनोज कुमार 'बच्चन'

जरूरी है विरासत संपत्ति का संरक्षण

विरासत संपत्ति का संरक्षण इतिहास का संरक्षण है। पुरातत्व अवशेषों की हर हाल में रक्षा होनी चाहिए। युद्ध की स्थिति में भी विरासत को नुकसान नहीं पहुँचे, इसकी योजना बनाई जानी चाहिए। ये बातें पटना संग्रहालय सभागार में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में पुरातत्वविद् डॉ. चित्तरंजन प्रसाद सिन्हा ने कहीं। कार्यशाला का विषय 'विरासत संपत्ति में आपदा प्रबंधन' रखा गया है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक विरासत मानव जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के सचिव आनन्द किशोर ने उम्मीद जताई कि कार्यशाला उपयोगी साबित होगी । पुरातत्वविद् डॉ. उमेश चन्द्र द्विवेदी ने कहा कि 1978 में आए भूकंप में पटना म्यूजियम की दीवारों में दरारें आ गई थीं। इसके अलावा संग्रहालय में एक बार आग भी लगी, जिसे यहाँ के कर्मचारियों ने अपनी तत्परता से काबू में कर लिया। आपदा के दौरान विरासत को बचाने के लिए ठोस योजना बनाने की आवश्यकता है। आर्कियोलॉजी निदेशक अतुल कुमार वर्मा ने कहा कि कुछ साल पहले दिल्ली के कुतुबमीनार में एक घटना के दौरान कई बच्चों की मौत हो गई थी। उन्होंने कहा कि पुरावशेषों के भ्रमण के दौरान अफवाहों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के विशेष कार्य पदाधिकारी डॉ. गगन ने कहा कि विकास सूचकांक में सांस्कृतिक विकास की महत्वपूर्ण भूमिका है। सांस्कृतिक विकास के लिए विरासतों को संरक्षित करना होगा।

हिन्दुस्तान के अधिकतर म्यूजियम में सुरक्षा के नाम पर आपातकालीन निकासी (इमरजेंसी एक्जिट) बंद है। यह ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण से खिलवाड़ है। आपदा से पहले और बाद के सुरक्षा उपायों के लिए डिजास्टर मैनेजमेंट प्लान जरूरी है। इससे संग्रहालय के धरोहरों को बहुत हद तक सुरक्षित बनाया जा सकता है।

कार्यशाला के दूसरे दिन यह बात पुरातत्वविद् अरविंद महाजन ने कही। उन्होंने कहा कि आपदा के समय मीडिया को कंट्रोल करना भी जरूरी है। रूड़की के पूर्व प्रोफेसर और बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकार के सदस्य प्रो. एस आर्या ने म्यूजियम और ऐतिहासिक स्थलों के आसपास की सुरक्षा उपायों की चर्चा की। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के एमएस चौहान ने पावर प्वाइंट प्रजेन्टेशन के जरिए आपदा के समय हेरिटेज की सुरक्षा कैसे की जाए, इस बारे में बताया। पुरातात्विक अवशेषों को बचाने के लिए भूकम्परोधी भवन रहना अनिवार्य है। इसके साथ भवनों के अंदर रखे अवशेषों को रखने का तरीका बदलना होगा। भूकम्प आने पर अवशेष स्वत: गिरना नहीं चाहिए। इसके लिए डिजाइन ऐसा बनें कि दर्शकों को देखने में बदसूरत न लगे। 'डिजास्टर मैनेजमेंट ऑफ हेरिटेज प्रोपॉटी' विषय पर दो दिवसीय सेमिनार के समापन के मौके पर आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य आनंद स्वरूप शर्मा ने कहा कि रखे अवशेष भूकम्प आने पर उलट कर नष्ट न हो जाएं। इस अवसर पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण पटना अंचल के अधीक्षक पुरातत्वविद् डॉ. एमएस चौहान ने कहा कि धरोहरों को संरक्षित रखना चुनौती है। हिमालय से जुड़े क्षेत्रों में नागर शैली की कलाकृतियाँ हैं। मंदिर अधिक है। उन्हें संरक्षित रखने की चुनौती है।

लोदीपुर के फायर ऑफिसर सिपाही सिंह ने म्यूजियम के आसपास ज्वलनशील पदार्थों के नहीं रखने और परिसर में अग्निशामक की पर्याप्त व्यवस्था कराने की बात कही। संचालन उमेशचन्द्र द्विवेदी ने किया। संग्रहालय निदेशालय के निदेशक जेपीएन सिंह, पुरातत्वविद् सीपी सिन्हा, सुरेन्द्र सिंह, शंकर सुमन के अलावा दूसरे लोग भी शामिल रहे।